बहाई उपासना मंदिर

खास–खास तारीखें

मंदिर का शिलान्यास किया गया	1912
मंदिर भवन का निर्माण शुरू हुआ	1921
निर्माणकार्य पूरा, उद्घाटन	1953

क्षमता

प्रार्थना भवन में बैठने की क्षमता	1,192

लम्बाई–चौड़ाई

अंदर से ऑडिटोरियम की ऊँचाई	42 मीटर
गुम्बद का व्यास	27.5 मीटर

दर्शन और प्रार्थना के लिये : प्रत्येक दिन खुला है; कोई प्रवेश शुल्क नहीं है।

ऑडिटोरियम

6.00 से शाम 10.00 तक

आगन्तुक केन्द्र

सुबह 100.00 बजे से शाम 5.00 तक

पर्यटन सूचना : पर्यटन दलों के लिये 847–853–2300 पर फोन करें। छोटे ग्रुप तथा अन्य आगन्तुकों को पूर्व सूचना देने की जरूरत नहीं। साल के प्रत्येक दिन निःशुल्क प्रवेश।

पता : 100 लिंडेन एवेन्यू, विलमेट, इलिन्योंस 60091

फोन : 847.853.2300

ई–मेल : how@usbnc.org

वेबसाइट : www.bahaitemple.org

प्रवेश द्वार और अंदर के शिलालेख

मंदिर के प्रवेश द्वार और अंदर के हिस्सों में आगन्तुक बहाउल्लाह के लेखों से 18 उद्धरण पायेंगे :

प्रवेश द्वार के ऊपर

सम्पूर्ण पृथ्वी एक देश है और समस्त मानवजाति इसके नागरिक।

मेरी दृष्टि में सर्वाधिक प्रिय वस्तु है न्याय, यदि तुम्हें मेरी अभिलाषा है तो उससे विमुख न हो।

मेरा प्रेम मेरा दुर्ग है, जो इसमें प्रवेश पाता है वह सुरक्षित और संरक्षित रहता है।

जब तक तुम स्वयं पापानुवसित हो, दूसरों के पापों पर विचार भी न करो।

तेरा हृदय मेरा निवास स्थान है, मेरे अवतरण के लिये इसे स्वच्छ रख।

मृत्यु को हमने तुम्हारे लिये सुख का संदेशवाहक बनाया है, फिर तू दुःख क्यों करता है।

मेरी पृथ्वी पर मेरा उल्लेख कर ताकि अपने स्वर्ग में मैं तुम्हें याद कर सकूं।

हे धरती के धनवानो ! तुम्हारे बीच निर्धन मेरी धरोहर हैं, मेरी धरोहर की तू रक्षा कर।

समस्त ज्ञान का स्रोत ईश्वर का ज्ञान है, उसकी महिमा अपरम्पार है।

अंदर के हिस्सों में

ईश्वर के सभी संदेशवाहक एक ही धर्म की घोषणा करते हैं।

धर्म जाज्वल्यमान प्रकाश और अजेय दुर्ग है।

तुम एक ही वृक्ष के फल और एक ही शाख की पत्तियां हो।

एकता का प्रकाश इतना प्रखर है कि यह सम्पूर्ण पृथ्वी को प्रकाशित कर सकता है।

सभी धर्म के अनुयायियों के साथ मित्रभाव से रहो।

हे अस्तित्व के पुत्र! तू मेरा दीपक है और तुझमें मेरा प्रकाश है।

हे अस्तित्व के पुत्र! मेरे प्रेम के कारण तू मेरी मर्यादा के अनुकूल चलन रख।

तुम्हारा स्वर्ग है मेरा प्रेम; तुम्हारा स्वर्गिक आवास है मुझसे तेरा पुनर्मिलन।अच्छे चरित्र का प्रकाश सूर्य के प्रकाश से भी अधिक प्रखर होता है।

Hindi

स्वागतम्

उत्तर अमरीकी महाद्वीप के लिये

विलमेट का बहाई उपासना मंदिर

दुनिया के सात बहाई मंदिरों में एक, यह बेजोड़ इमारत एकता का प्रतीक है और ईश्वर के स्मरण के लिये लोगों को आमंत्रित करती है। प्रत्येक मंदिर के जहाँ अलग–अलग डिजाइन हैं वहीं सभी मंदिर एक ही उद्देश्य से प्रेरित हैं। नौमुखी भवन के चारों ओर मनोरम उद्यान और भवन के शीर्ष पर एक खूबसूरत गुम्बद (ईश्वर के अधीन सभी धर्मों और लोगों की एकता का प्रतीक)।

30 सालों तक चले निर्माण कार्य के बाद सन् 1953 में इस उपासना मंदिर का उद्घाटन किया गया। कनाडा निवासी फ्रेंच वास्तुशिल्पी लुइस बर्गस ने 8 सालों की कड़ी मेहनत के बाद इस मंदिर के महान उद्देश्य के अनुकूल डिजाइन तैयार किया। बर्गस के नक्शे, जिनमें कुछ के लिये 109 फीट के लम्बे कागज की जरूरत हुई थी, को आकार देने के लिये दानेदार पत्थर और सफेद सीमेंट के पैनल ढालने की एक नई प्रक्रिया का आविष्कार किया गया ताकि मंदिर के जटिल बाहरी हिस्से का निर्माण किया जा सके। लोहे के विशाल ढाँचों में सैकड़ों ऐसे पैनल फिट किये गये।

एक पृथक् पावन स्थली

मंदिर का भवन और इसके उद्यान ऐसे पावन स्थान के रूप में जाने जाते हैं जहाँ लोगों को ईश्वर के स्मरण तथा सौंदर्य और प्रकाश के वातावरण में मनन के लिये आमंत्रित किया जाता है। बहाई धर्म सौन्दर्य के महत्व को मान्यता प्रदान करता है। प्रत्येक युग में प्रकट किये गये ईश्वर के वचन सुन्दर और व्यावहारिक हैं तथा सभ्यता के नवनिर्माण की एक नई दृष्टि प्रदान करते हैं।

बहाई धर्म : एकता का धर्म

बहाई धर्म एक स्वतंत्र विश्व धर्म है, जिसे दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में रहने वाले विभिन्न पृष्ठभूमि के 50 लाख से भी अधिक लोग मानते हैं। इस धर्म में उनकी आस्था इस बात से है कि हम सब एक ही मानव नस्ल के हैं; सभी धर्म एक ही

स्रोत से प्रेरित हैं और चिरप्रतीक्षित शांति का युग आ चुका है, जिसका वचन दुनिया के पावन ग्रंथों में दिया गया है।

बहाई धर्म के मुख्य सिद्धांत हैं :

- हर प्रकार के पूर्वाग्रह को समाप्त करना
- स्त्री–पुरुष की समानता
- विज्ञान और धर्म के बीच समन्वय
- एक विश्व सरकार द्वारा विश्व शांति का समर्थन
- आर्थिक समस्याओं के आध्यात्मिक समाधान
- सार्वभौमिक शिक्षा

बहाई धर्म को क्या बनाता है अनूठा : प्रगतिशील धर्म प्रकाशन

बहाई यह मानते हैं कि अनादिकाल से ईश्वर अपने संदेशवाहकों के माध्यम से स्वयं को और अपनी शिक्षाओं को मानवजाति के सम्मुख प्रकट करते आये हैं। इस दौरान अब्राहम, मूसा, कृष्ण, बुद्ध, जरस्थु, ईसा और मुहम्मद अवतरित हुये। ईश्वर के इन संदेशवाहकों का उद्देश्य सभ्यता के आध्यात्मिक विकास के विभिन्न चरणों को आगे ले जाना था। बहाउल्लाह को इन ईश्वरीय संदेशवाहकों की कड़ी में बहाई अधुनातन अवतार मानते हैं, जिनके आने का वचन सभी धर्मग्रंथों में दिया गया है।

बहाई धर्म का इतिहास

बहाई धर्म की स्थापना मिर्ज़ा हुसैन अली (1817–1892) द्वारा फारस (अब ईरान) में की गई थी। उन्हें 'बहाउल्लाह' के नाम से जाना गया, अर्थात् ''ईश्वर का प्रकाश'' के नाम से सम्बोधित किया गया। ईश्वर के अधुनातन संदेशवाहक के रूप में उनके अवतरण का उद्देश्य था शांति के एक ऐसे युग का आरम्भ करना जिसका वचन सैय्यद अली मुहम्मद (1819–1850) द्वारा दिया गया था, जिन्हें 'बाब' अर्थात् द्वार के रूप में जाना जाता है।

अपनी धार्मिक शिक्षाओं के कारण बहाउल्लाह को अपने जीवन का अधिकांश समय एक कैदी तथा निष्कासित के रूप में बिताना पड़ा। वह तत्कालीन फारसी और टर्की सरकारों के अधीनस्थ देशों में निष्कासित किये जाते रहे। सन् 1868 में उन्हें फिलस्तीन (अब इज़रायल) के अक्का नामक स्थान की कारा नगरी में निष्कासित कर दिया गया, जहाँ उनकी मृत्यु सन् 1892 में हो गई। बहाउल्लाह ने संकेत दिया था कि उनके धर्म का विश्व केन्द्र अक्का–हायफा में होगा।

बहाई उपासना मन्दिर : प्रकाश और एकता का प्रतीक

लुईस बर्गियस, मन्दिर के वास्तुशिल्पी ने आलंकारिक नक्काशी की परिकल्पना प्रकाश के माध्यम से की–बहाउल्लाह के माध्यम से प्रकट किया गया ईश्वर के एक नये प्रकटीकरण का प्रकाश। मन्दिर का डिजाइन न तो पूरब और न ही पश्चिम की संस्कृति का मोहताज बना, बल्कि एक ऐसे अनूठे ढाँचे को खड़ा करने की कोशिश की गई जहाँ दुनिया भर के लोग आ सकें और प्रार्थनाओं के जरिये अपने दिलों को जोड़ सकें।

गुम्बद के ऊपरी हिस्से में अरबी के शब्द 'या–बहा–उल–आभा' रूपायित किया गया है, जिसका आह्वान का अर्थ है ''हे सर्वमहिमामय की महिमा''।

खम्भों की नक्काशी में अतीत के सभी धार्मिक प्रतीकों को संजोने की कोशिश की गई है ताकि हर धर्म के मानने वाले भाईचारे के सूत्र में बंध सकें।

एक जीवंत सामुदायिक जीवन

बहाई विभिन्न अवसरों पर साथ–साथ मिलते–बैठते हैं ताकि एक प्रेमपूर्ण, सहयोगी और जीवंत समुदाय की स्थापना की जा सके। उनके कार्यक्रम, उनके द्वारा समारोहों और उत्सवों का आयोजन और चलाई जाने वाली विभिन्न योजनायें उन सबके लिये हैं जो उनमें भाग लेना चाहते हैं। उनके द्वारा चालये जाने वाले कुछ कार्यक्रम हैं :

स्टडी सर्कल, जिसमें जीवन का उद्देश्य और आत्मा की प्रकृति जैसे विषय शामिल किये जाते हैं।

भक्तिपरक बैठकें, जिसमें सभी धर्मों के लोग एक प्रेमपूर्ण वातावरण में बैठ साथ–साथ प्रार्थना करते हैं।

बच्चों की कक्षायें, जो बच्चों में सत्यवादित, दयालुता और प्रेम जैसे गुण के विकास में मदद करते हैं।

किशोर सशक्तिकरण कार्यक्रमों के माध्यम से किशोर अवस्था के लोगों को सेवा, मित्रता और कला के पाठ पढ़ाये जाते हैं।

अमेरिका में बहाई धर्म

सन् 1893 में शिकागो के विश्व धर्म संसद में अपनी पहचान बनाने के बाद अमेरिका में बहाई धर्म का क्रमिक विकास हुआ। आज अमेरिका में 155,000 से भी अधिक बहाई हैं, देश के सभी हिस्सों में वे रहते हैं, जिनमें 100 से भी अधिक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ भारतीय मूल के बहाई निवास करते हैं। बड़ी संख्या में बहाई कैलिफोर्निया, जौर्जिया, इलिन्यॉस, दक्षिण कैरोलिना और टेक्सस में रहते हैं।

अमेरिकी बहाई समुदाय की निर्वाचित प्रशासनिक संस्था है अमेरिकी बहाई समुदाय की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो नौ सदस्यों की परिषद् है और जिसका मुख्यालय इवैंस्टन, इलिन्यॉस में है।

चित्र परिचय

अमेरिका के आरम्भिक अनुयायी (ऊपर से नीचे) थौर्नटन चेज़, कौरिने ट्रू और लुइस ग्रेगरी तीन पीढ़ियों के नवाजो बहाई एक स्टडी सर्कल में। पूर्वाग्रहों को दूर करने के प्रति अमेरिकी बहाई समुदाय अधिक सजग है।

बहाई धर्म के बारे में अधिक जानने के लिए

पूरी दुनिया में बहाइयों द्वारा स्टडी सर्कल, भक्तिपरक बैठकों और बच्चों की कक्षाओं के आयोजन किये जाते हैं, ताकि रूचि रखने वाले बच्चे इनमें शामिल हो सकें। अपने आस–पास के बहाइयों के विषय में जानने के लिये फोन करें–1-800-22 UNITE (1-800-288-6483) अथवा वेबसाइट देखें www.bahai.us.

उपासना मंदिर के ऑडिटोरियम में प्रतिदिन होने वाले भक्तिपरक कार्यक्रमों में सबका स्वागत है। साथ ही, आगन्तुक केन्द्र में आयोजित की जाने वाली परिचायात्मक कक्षाओं, अनौपचारिक बैठकों स्टडी सर्कल और 'गाइडेड टूर' के लिये भी आमंत्रित किया जाता है। रूचि–पत्र भरकर आप बहाई धर्म के बारे में अधिक जानकारी पा सकते हैं। इस जानकारी में आपके आस–पास के बहाइयों के नाम–पते तथा अनेक भाषाओं में उपलब्ध जानकारी भी शामिल हैं।

बहाउल्लाह को इस युग के ईश्वरीय संदेशवाहक के रूप में स्वीकार कर, उनके विधानों को मानकर, उनकी शिक्षाओं का अनुसरण कर तथा बहाई समुदाय को इस बात की जानकारी देकर कोई भी व्यक्ति बहाई बन सकता है।